निष्कर्ष

वर्तमान समय में 'साम्प्रदायिकता' एक बेहद गंभीर समस्या है। डॉ. राही मासूम रजा इस समस्या से टकराते हैं तथा वे इसके पीछे के चेहरे को बेनकाब करते हैं। उन्होंने बेबाक और बहादुरी से सच्ची बात कहने में कभी भी कदम पीछे नहीं हटाए। हिंदी उर्दू में आज तक कोई ऐसा साहित्य चिंतक नहीं हुआ जो अपनी बात इतनी सफाई से कहे।

राही जी के लिए हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई में कोई भेद नहीं था। उन्होंने राष्ट्रीयता का आधार भाषा व संस्कृति को माना है, धर्म को नहीं। वे बार-बार इस बात को समझाते रहे कि धर्म को राजनीति से न जोड़ा जाय यदि धर्म को राजनीति से जोड़कर सत्ता प्राप्त करने की कोशिश की गयी तो इसके परिणाम बहुत ही खतरनाक होंगे। ये बातें आज सही सिद्ध हो रही हैं, इसके परिणाम आए दिन हो रहे साम्प्रदायिक दंगों में हम सब देख रहे हैं।

वे लोग जिन्होंने सत्ता प्राप्त करने के लिए धर्म और जाति की राजनीति की, उनकी उन्होंने खुलकर आलोचना की। राही जी हर तरह की संकीर्णता और कट्टरता के विरोधी रहे। चाहे वो धर्म की हो, जाति की हो, भाषा की हो या प्रांत की। वह जीवन भर एक संपूर्ण हिंदुस्तानियत की खोज में लगे रहे।

राही जी के हर उपन्यास में मुसलमानों के प्रति लोगों की सोच को दर्शाया गया है। वह इस बात से सर्वथा दुखी रहते थे कि मुसलमानों के साथ ही भेदभाव क्यों होता है? राही जी का यह दर्द उनके द्वारा लिखित वीर अब्दुल हमीदकी जीवनी 'छोटे आदमी की बड़ी कहानी' में साफ दिखता है। उन्होंने एक प्रसंग में लिखा है- मुझे हिंदुओं और मुसलमानों में कोई दिलचस्पी नहीं है। मैं परेशान हूँ हिन्दुस्तान के लिए। हिंदुओं और मुसलमानों में बंटी सेना दुश्मन का मुकाबला नहीं कर सकती। हम सब एक हैं, क्योंकि यह विशाल और महान देश हमारा वतन है। अगर ऐसा नहीं है तो कोई मुझे बताएं कि हमीद को किस चीज ने उकसाया था।

राही जी काफी आक्रोश भरे शब्दों में गुरू गोलवलकर जैसे कट्टरपंथियों से सीधे सवाल किए हैं। वे कहते हैं- गुरूजी महाराज, नेपाल को अपनी कांफ्रेस के उद्घाटन का न्यौता देकर भी आप भारत के वफादार हैं और हम पाकिस्तान के विरूद्ध लड़ते-लड़ते भी पाकिस्तानी हैं। यह बात अब कोई भारतीय मानने को तैयार नहीं होगा। आगे लिखते हैं - इन पागलों को कौन समझाए कि कौम का धर्म से कोई संबंध नहीं होता। हिंदुस्तान का हर नागरिक हिंदू है चाहे वह सिक्ख हो या इसाई, मुसलमान हो या ब्रह्म समाजी। कौमें देशों से बनती है, धर्मों से नहीं।

कहने का तात्पर्य यह है कि राही जी हिंदुस्तान की वही परम्परा फिर से स्थापित करने की कोशिश करते हैं जो प्राचीनकाल से चली आ रही है। यहाँ विभिन्न धर्मों, जातियों, संस्कृतियों के लोग एक साथ रहते चले आ रहे हैं। उनमें धर्म के आधार पर विभेद नहीं है। वह मानवता के आधार पर एक-दूसरे के साथ रहते चले आ रहे हैं। साम्प्रदायिकता के बीज तो मौकापरस्त लोगों की देन है। उन्हें लगता है कि यही एक विषय है जिसके आधार पर हम अपनी राजनीति कर सकते हैं। वे शायद इसके परिणामों से अवगत नहीं हैं।

'टोपी शुक्ला' में राही ने मध्यवर्ग के संकट, बढ़ते हुए जातीय गठजोड़ों का विस्तार से चित्रण किया है। हमारे समाज में मध्यम वर्ग की यह कमजोरी है कि वह सही विचारों और परिवर्तन के लिए संघर्ष नहीं करता। बिना सामूहिक सोच विकसित किए साम्प्रदायिकता और जातिवाद से छुटकारा नहीं मिल सकता। यदि इन समस्याओं का निदान नहीं किया गया तो यह भारत की एकता व अखंडता के लिए खतरा हो सकता है। राही जी बार-बार हिंदुस्तान के साधारण लोगों को इस विषय पर सचेत करते हैं कि समय रहते उठें तथा देश को सही रास्ते पर ले जाने में अपना सहयोग करें।

परिशिष्ट

(1)

साम्प्रदायिकता से संबंधित कुछ प्रमुख विद्वानों का कथन -:

- साम्प्रदायिकता तभी जायेगी जब साम्प्रदायिक मानसिकता जाएगी। साम्प्रदायिकता नष्ट करने के लिए मुस्लिम, सिक्ख, हिंदू, ईसाई सभी भारतीयों का कर्तव्य है कि वे साम्प्रदायिक विचारधारा के पार जाए और एक प्रमाणिक राष्ट्रवादी मानसिकता अपनाएं।

-सुभाष चंद्र बोस

- चूंकि सब धर्मों में कुछ न कुछ अपूर्णता होती है, इसलिए प्रत्येक धर्म में धर्म के नाम पर अधर्म घुस जाता है। चूंकि वह धर्म के नाम पर घुसता है, इसलिए धर्म और अधर्म में भेद करना कठिन हो जाता है किन्तु भेद तो करना ही चाहिए।

-महात्मा गांधी

- मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप गांधी जी के कार्यक्रम को अमल में लाए। गांधी जी ने महान त्याग कर हमें आजादी दिलाई है। मैं आपको बताता हूँ कि गांधी के राम राज्य को लाने के लिए जो चीज सबसे पहली है, वह है हिंदू-मुस्लिम एकता।

- सरदार बल्लभ भाई पटेल

- इस समय कुछ भारतीय नेता भी मैदान में उतरे हैं, जो धर्म को राजनीति से अलग करना चाहते हैं। झगड़ा मिटाने का यह एक सुंदर इलाज है और हम इसका समर्थन करते हैं। अगर धर्म को राजनीति से अलग कर दिया जाय तो राजनीति पर हम सभी इकट्ठे हो सकते हैं। धर्मों में हम चाहे अलग-अलग रहें।

- सरदार भगत सिंह

- साम्प्रदायिक हिंसा का अर्थ एक ऐसी हिंसा है जिसमें किसी व्यक्ति या समूह को धार्मिक पहचान के आधार पर चिन्हित करके हिंसा का शिकार बनाते हैं।

-विभूति नारायण राय

- हालांकि मुसलमानों द्वारा की जा रही गो-हत्या आंदोलन का कारण बना पर यह आंदोलन असल में हमारे विरूद्ध है जो अपनी सेना आदि के लिए मुसलमानों से अधिक गो-हत्याएं कराते हैं।

-महारानी विक्टोरिया

- मुझे इस बात में लेशमात्र भी संदेह नहीं है कि साम्प्रदायिक मतभेदों का कुहासा आजादी के सूर्य का उदय होते ही दूर हो जायेगा।

- महात्मा गांधी

- साम्प्रदायिकता के खिलाफ एक सतत अभियान की जरूरत है। बहुत सारे धर्मनिरपेक्ष लोगों की पार्टियां तभी आवेश में आती हैं जब देश में साम्प्रदायिक हिंसा भड़कती है। इसके बाद फिर वे उदासीन हो जाते हैं। इसी तरह कुछ लोग सिर्फ चुनाव के दौरान साम्प्रदायिकता विरोधी होते हैं। मगर चुनाव के बाद सबकुछ भूल जाते हैं।

- विपिन चंद्र

- साम्प्रदायिक हिंसा एक प्रक्रिया है जिसमें बेगुनाह लोग केवल इस कारण मारे जाते हैं कि वे किसी खास धर्म को मानते हैं।

- राम पुनियानी

-

- साम्प्रदायिकता सत्तासीन तबकों के लिए एक राजनीतिक हथियार है। समाज में दो तरह की राजनीति होती है। एक राजनीति लोगों को जोड़ती है। दूसरी, लोगों की समन्वयता को तोड़ती है।

- असगर अली इंजीनियर

- एक कट्टरता होती है, संयम और तपस की कट्टरता। यह कट्टरता निष्ठा कही जाती है। दूसरी कट्टरता होती है, घृणामूलक और युद्धकामी। इसी को 'साम्प्रदायिकता' कहते हैं।

- कुबेर नाथ राय

- मानवीय शांति को पहला खतरा है- राष्ट्रवाद से और दूसरा खतरा-साम्प्रदायवाद से, तीसरा-मानवीय शांति को खतरा सामाजिक कुव्यवस्थाओं से है तो चौथा विज्ञान से।

- सुश्री विमला

- जो व्यक्ति अपने सम्प्रदाय के प्रति लगाव के कारण अन्य लोगों के मतों का अपमान करता है, वह अपने इस व्यवहार द्वारा अंततः अपने ही सम्प्रदाय का अहित करेगा।

- सम्राट अशोक

- भारतीय राज्य तो धर्मनिरपेक्ष है, परन्तु भारतीय समाज अत्यंत धार्मिक है।

-जवाहर लाल नेहरु

(2)

साम्प्रदायिकता आज भारतीय संविधान और भारतीय लोक संस्कृति के मूल्यों के लिए चुनौती बन चुकी है। लोकतंत्र के सामने आज सबसे विकट समस्या साम्प्रदायिकता ही है। हमारे संविधान निर्माताओं ने भले ही भारत को धर्मनिरपेक्ष घोषित किया हो, लेकिन यहाँ के जनमानस में घोर साम्प्रदायिकता भरा हुआ है। जरूरत है उससे निकलने की। विभूति नारायण राय ने अपने 'साम्प्रदायिक दंगे और भारतीय पुलिस' नामक अध्ययन (किताब) में साम्प्रदायिकता को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया है।

'साम्प्रदायिक दंगों' के संबंध में बहुसंख्यक की सोच दो पूर्वाग्रहों पर आधारित है-

1. बहुसंख्यक लोगों का मानना है कि दंगों की शुरूआत मुस्लिम ही शुरू करते हैं।

2. हिंदुओं का मानना है कि मुसलमान क्रूर, हिंसक, विश्वासघाती और कट्टर होते हैं।

भारत में साम्प्रदायिक दंगों के मनोविज्ञान को समझने के लिए बहुसंख्यक समुदाय के मन में गहरे पैठी इन दोनों धाराओं की भ्रांति को नीचे दी गयी तालिका से समझने में मदद मिल सकती है। जो इस प्रकार है-:

वर्ष	**साम्प्रदायिक दंगों की संख्या**	**मृतकों की संख्या**		**कुल मृतक**
		हिंदू	**मुसलमान**	
1968	346	24	99	133
1969	519	66	558	674
1970	521	68	176	298
1971	321	38	65	103
1972	210	21	45	70
1973	242	26	45	72
1974	248	26	61	87
1975	205	11	22	33
1976	169	20	19	39
1977	188	12	24	36
1978	219	51	56	108
1979	304	80	150	261
1980	427	87	278	375
योग	3949	530	1598	2289

स्त्रोतः 'भारतीय पुलिस और संप्रदायिक दंगे' **विभूति नारायण राय**

संदर्भ ग्रंथ सूची

आधार ग्रंथ-:

1. रजा, डॉ. राही मासूम. (2004). *टोपी शुक्ला*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.

सहायक संदर्भ ग्रंथ सूची -:

1. चंद्र, विपिन. (1996). *आधुनिक भारत में साम्प्रदायिकता*. नई दिल्ली: हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय.

2. इंजीनियर, असगर अली. (2004). *भारत में साम्प्रदायिकताः इतिहास और अनुभव*. इलाहाबाद : इतिहास बोध प्रकाशन.

3. डॉ. रणजीत (सं.), साम्प्रदायिकता का जहर, लोकभारती प्रकाशन, द्वितीय संस्करण, 2011.

4. चंद्र, विपन. (2004). *साम्प्रदायिकता एक परिचय*. नई दिल्ली : अनामिका पब्लिशर्स एवं डिस्ट्रीव्यूटर्स.

5. चंद्र, सुभाष. (2008). *साम्प्रदायिकता*. नई दिल्ली : साहित्य उपक्रम.

6. रजा, डॉ. राही मासूम. (1989). *आधा गांव*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.

7. रजा, डॉ. राही मासूम. (2004). *ओस की बूंद*. नई दिल्ली : राजकमल प्रकाशन.

8. दिनकर, रामधारी सिंह. (2014). *संस्कृति के चार अध्याय*. इलाहबाद : लोक भारती प्रकाशन.

9. पाण्डेय, डॉ. राजबली. (2003). *हिंदू धर्मकोश*. लखनऊ : उ.प्र. हिंदी संस्थान.

10. हिंदी शब्द सागर, दसवां भाग, नागरी मुद्रण, वाराणसी नवीन संस्करण, सं.-2030, सन् 1930.

11. राय, डॉ. गोपाल. (2000). *हिंदी उपन्यास कोश*. पटना : ग्रंथ निकेतन.

12. रावत, हरिकृष्ण. (1998). *समाजशास्त्र विश्वकोश*. जयपुर : रावत पब्लिकेशन.

13. आहूजा, राम. (2000). *भारतीय समाज*. जयपुर : रावत पब्लिकेशन.

14. शुक्ल, राम लखन (सं.), आधुनिक भारत का इतिहास, हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय, दिल्ली विश्वविद्यालय, प्रथम संस्करण- 1987.

15. पुनियानी, राम. (2005). *साम्प्रदायिक राजनीतिः तथ्य एवं मिथक*. नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.

16. कालभोर, गोपीनाथ. (2002). *धर्म निरपेक्षता और राष्ट्रीय एकता*. जयपुर : ज्योति प्रकाशन.

17. चंद्र, विपिन. (2002). *आजादी के बाद का भारत*. नई दिल्ली : हिंदी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय.

18. राय, विभूति नारायण. (2004). *साम्प्रदायिक दंगे और भारतीय पुलिस*. नई दिल्ली : राधाकृष्ण प्रकाशन.

लेख व निबंध -:

1. खुदा हाफिज कहने का मोड़, वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, द्वितीय संस्करण - 2001.

2. लगता है बेकार गये हम, वाणी प्रकाशन, दरियागंज नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 1999.

3. सिनेमा और संस्कृति (2001), वाणी प्रकाशन, दरियागंज, नयी दिल्ली, संस्करण-2003.

जीवनी -:

1. छोटे आदमी की बड़ी कहानी, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली.

पत्र-पत्रिकाएं -:

1. अभिनव कदम (राही मासूम रजा केन्द्रित), नवंबर-2001, अक्टूबर,-2002, सं.- चंद्रदेव राय, जय प्रकाश धूमकेतु.

2. संस्कृति (राज्य विशेषांक), सं. वेदप्रकाश गौढ़, अंक-20, वर्ष-2015, अर्धवार्षिकी.

3. जन मीडिया, वर्ष-3, अंक-32, नवंबर-2014.

4. आलोचना, सं. परमानंद श्रीवास्तव, अप्रैल-जून, 2000.

5. हंस, सं. परमानंद श्रीवास्तव, अतिथि संपादक-असगर वजाहत, अगस्त-2003.

6. नया पथ (साम्प्रदायिक फासीवाद पर केन्द्रित) सं. मुरली मनोहर प्रसाद सिंह व चंचल चौहान जनवरी-मार्च 2014, अंक 1.

7. वैचारिकी (द्वैमासिक शोध पत्रिका), जुलाई-अगस्त, 2014, भाग 30, अंक 4.